शेख़ फ़रीद - सबद १९

फरीदा कूकेदिआ चांगेदिआ मती देदिआ नित ॥

सलोक, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३७८

फरीदा कूकेदिआ चांगेदिआ मती देदिआ नित ॥
जो सैतानि वंञाइआ से कित फेरहि चित ॥१५॥

सार: एक अनुकूलित दिमाग जो हमेशा दूसरों पर राय देता है, वास्तविक समझ और संबंध में बाधा पैदा कर सकता है। यह मानसिकता अक्सर पहले से बनी धारणाओं पर आधारित होती है जिससे नुकसानदायक और पक्षपातपूर्ण सोच पैदा होती है।

फरीदा कूकेदिआ चांगेदिआ मती देदिआ नित ॥
फरीद का कहना है कि कुछ लोग लगातार सलाह देने के लिए बोलते हैं जो एक उत्तेजित अनुकूलित, पक्षपातपूर्ण दिमाग का प्रतिनिधित्व करता है।

जो सैतानि वंञाइआ से कित फेरहि चित ॥१५॥
यदि मन शैतानी नकारात्मकता की बुराई के प्रभाव में आ जाए तो वह सकारात्मकता की अच्छाई की ओर कैसे परिवर्तन कर सकता है? (१५)

तत्त्व: शेख़ फ़रीद उस सोच को चुनौती देते हैं जिसमें लोग पक्षपात और डर के कारण बेहतर संभावनाओं को छोड़कर कम को स्वीकार कर लेते हैं। वह हमें नकारात्मकता से सकारात्मकता की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं क्योंकि हर छोटा कदम एक ऐसा दृष्टिकोण विकसित कर सकता है जो हमारे मन को सशक्त बनाता है और एक पूर्ण संतोषजनक जीवन के लिए रास्ता बनाता है।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com